NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

जैविक खेती के महत्व एवं लाभ

डॉ शशि यादव, डॉ सुमन प्रसाद मौर्या, आरती, अनुराधा

परिचय:

जैविक खेती, खेती करने की वह विधि होती है, जिसमे किसी भी तरह के कीटनाशकों, रसायनो का उपयोग नहीं किया जाता हैं। जैविक खेती में सिर्फ जानवरो से बनने वाले खाद जैसे पशुओं से निर्मित खाद, मुर्गी पालन, हरा खाद आदि का प्रयोग किया जाता हैं। इससे भूमि को नुकसान नहीं होता है और भूमि उपजाऊ बनी रहती हैं। जैविक खेती एक ऐसी तकनीक है जिसमें रसायनिक उर्वरको एवं कीटनाशको दवाओं के लिए कोई जगह नहीं होती है।

जाते हैं. जैविक खेती मिट्टी की उर्वराशक्ति को प्राकृतिक स्वरूप बनाने के साथ साथ पर्यावरण की शुद्धता को बरकरार रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान समय में जैविक खेती से प्राप्त होने वाली फसलों की मांग बहुत तेज़ी से बढ़ी है। विश्व में जैविक उत्पादों का बाजार काफी हद तक बढ़ चुका है।

जैविक खेती के उद्देश्य -

- खाने की वस्तुओं में रासायनिक पदार्थों का इस्तेमाल रोका जा सके।
- ऑर्गेनिक खेती के जरिये किसान मित्र कीटो को सुरक्षित रखा जा सके।

इस विधि में फसलों को गोबर की खाद, कम्पोस्ट, जीवाणु खाद, फ़सलो के अवशेष और प्रकृति में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के खनिज पदार्थों के जरिये पोषक तत्व दिए

- फसलों में लगने वाले रोगो और कीटों को नष्ट करने के लिए रासायनिक दबाइयों का छिड़काव को रोका जा सके ताकि यह स्वास्थ को नुकसान पहुंचाने

डॉ शशि यादव, डॉ सुमन प्रसाद मौर्या, आरती, अनुराधा
मानव - विकास एवं परिवार अध्ययन विभाग
सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय,
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या

में मददगार साबित न हो।

- जैविक खेती से फसलों के साथ साथ पशुओं की देखभाल भी अच्छे से होगी जैसे उनके खानपान, रखखाव, आवास आदि पर ध्यान रखा जा सकता है।
- ऑर्गेनिक खेती का सबसे मुख्य उद्देश्य इसके द्वारा वातावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है। सतत प्रबंधन के माध्यम से पर्यावरण की संपूर्ण सुरक्षा (मिट्टी और जलीय जीवों की सुरक्षा, जैव विविधता का आश्वासन) ।
- ऊर्जा और प्राकृतिक संसाधनों (जैसे पानी, मिट्टी, जैविक पदार्थ) का सतत प्रयोग।
- उपजाऊपन और मिट्टी की जैविक गतिविधि का संरक्षण और वृद्धि।
- हानिकारक रसायनों के खतरे से किसानों के स्वास्थ्य की रक्षा।
- जानवरों का स्वास्थ्य एवं कल्याण सुनिश्चित करना।
- जंगली जानवरो की सुरक्षा और प्रकृतिक जीवन को सुरक्षित रखना इसका मुख्य उदेश्य है. सतत प्रबंधन के माध्यम से पर्यावरण की संपूर्ण सुरक्षा (मिट्टी और जलीय जीवों की सुरक्षा, जैव विविधता का आश्वासन) ।
- सतत प्रबंधन के माध्यम से पर्यावरण की संपूर्ण सुरक्षा (मिट्टी और जलीय जीवों की सुरक्षा, जैव विविधता का आश्वासन) ।

जैविक खेती का महत्व-

जैविक खेती का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहा है, जिसका प्रमुख कारण है दुनिया भर में बढ़ती विभिन्न प्रकार की शारीरिक रोग, वायरस, महामारी और जिस प्रकार से कोरोना महामारी ने पुरे विश्व में स्वच्छता के साथ स्वस्थ जीवन शैली और शुद्ध खान-पान पर लोगों का ध्यान केंद्रित किया है, इससे जैविक आहार के प्रति लोगों की जागरूकता बढ़ी है और लोग स्वयं को रासायनिक खाद और कीटनाशक खेती से स्थानांतरण कर जैविक खेती से उत्पन्न हुए आहार का सेवन कर रहें हैं।

जैविक खेती की महत्ता का प्रमाण हम सबको भविष्य में और अधिक देखने को मिलेगा क्यूंकि किसी भी प्रकार का नाकारात्मक प्रभाव मनुष्य के स्वास्थ्य पर इसके उपभोग से नहीं होता है। अगर किसान जैविक खेती करके उत्पादन करतें हैं तो इससे सम्बंधित बनने वाले उत्पाद भी जैविक होंगे और इसका परिणाम यह होगा की मनुष्य विभिन्न रोगों से दूर रहने के साथ स्वस्थ जीवन व्यतीत करेगा क्यूंकि **'प्राकृतिक स्वयं सर्वोत्तम उपचारक होती है'।** जैविक खेती सम्पूर्ण रूप से प्रकृति के आधीन होती है, जो की अपनी उत्पादकता का स्त्रोत स्वयं प्रकृति

से ग्रहण करती है और मनुष्यों के द्वारा उस स्त्रोत के चक्र को खंडित कर उसमे रासायनिक खाद और कीटनाशक उपायों को मिलाकर उसकी शुद्धता को नष्ट कर दिया जाता है।

जैविक खेती से लाभ -

जैविक खेती से भूमि की उपजाऊ शक्ति में वृद्धि होती है, जिसकी अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है।

- भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती है।
- सिंचाई अंतराल में वृद्धि होती है।
- रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से लागत में कमी आती है।
- फसलों की उत्पादकता में वृद्धि।
- बाज़ार में **जैविक** उत्पादों की मांग बढ़ने से किसानों की आय में भी वृद्धि होती है |
- आर्गेनिक खेती में रासायनिक खेती की अपेक्षा काम लागत आती है. जिसकी वजह से लाभ अधिक होता है।
- जैविक खेती में रासायनिक खेती की अपेक्षा पानी की आवश्यकता कम होती है।
- जैविक खेती पर्यावरण संतुलन बनाये रखें में मददगार साबित होती है।
- ऑर्गेनिक खेती प्राप्त फसलों के सेवन से मनुष्य को किसी प्रकार से ग्रसित होनें का खतरा काम होता है।
- जैविक खेती की पैदावार पारम्परिक खेती की अपेक्षा काम होने के वाबजूद मार्केट ऑर्गेनिक खेती से प्राप्त फ़सलों की मांग अधिक होती है।
- इस विधि से खेती करने से कृषि सहायक कीट सुरक्षित रहनें के साथ ही उनकी संख्या में लगातार बृद्धि होती है।
- इस विधी के प्रयोग का करने से मिट्टी की जलधारण क्षमता में बृद्धि होती है और पानी के वाष्पीकरण मे भी कमी आती है।

जैविक खेती में प्रयोग किये जाने वाले उर्वरक-

जैविक खेती में ज्यादातर रासायनिक उर्वरकों की अनुमति नहीं है (जैसे, मिनरल नाइट्रोजन उर्वरक)। इसके लिए केवल जैविक खेती में प्रयोग करने के लिए स्वीकृत उर्वरकों की ही अनुमति दी जाती है।

हालाँकि, पौधे के विकास के लिए मिट्टी का उचित उपजाऊपन महत्वपूर्ण है। पौधे के विकास चरणों के दौरान ज्यादातर नाइट्रोजन, इसके अलावा फॉस्फोरस और पोटैशियम की भी ज़रूरत होती है। चूँकि पारंपरिक उर्वरकों की अनुमति नहीं होती, इसलिए कुछ सबसे अच्छे जैविक उर्वरकों में शामिल हैं जैसे कि:

a) हरी खाद

खेत में किसी वार्षिक या सदाबहार पौधे (रिजका, शिंबी) की बोवाई के साथ हरी खाद का उत्पादन शुरू होता है। इस विधि से मिट्टी

के उपजाऊपन और संरचना में सुधार होता है। यह पानी का अवशोषण और मिट्टी की नमी बढ़ाता है। इस विधि को खरपतवार पर नियंत्रण की विधि के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है। इस कारण से, नाइट्रोजन-फिक्सिंग पौधों, जैसे रिजका, क्रीपिंग क्लोवर, बाकला, ल्यूपिन, मटर, चना आदि का व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है। जई और बाजरा जैसे अनाज भी प्रयोग किये जाते हैं। चूँकि, ये पौधे (विशेष रूप से फलियां) काफी मात्रा में पोषक तत्व अवशोषित करते हैं, इसलिए मिट्टी में इनका समावेश पौधों को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करता है। अगर उत्पादक इस तकनीक का प्रयोग करने का फैसला करता है, तो इसे उगाने के लिए ऐसी सामग्री (बीज) का प्रयोग ज़रूरी है जो आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों की श्रेणी से संबंधित नहीं है।

b) कम्पोस्ट

कम्पोस्टिंग एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसमें सूक्ष्मजीवों, जैसे बैक्टीरिया, के विशेष समूह जैविक पदार्थों को खाद में बदल देते हैं। प्रक्रिया पूरी होने के बाद, कम्पोस्ट तैयार हो जाता है। कम्पोस्ट में जैविक पदार्थों, पोषक तत्वों और सूक्ष्म मात्रा में मौजूद तत्वों का मिश्रण शामिल होता है। यह प्राकृतिक उर्वरीकरण का एक तरीका है, जो मिट्टी की गुणवत्ता को बहुत अच्छा बनाता है। हालाँकि, कम्पोस्ट डालने से पहले आपको अपने स्थानीय लाइसेंस-प्राप्त कृषि विज्ञानी से परामर्श करना चाहिए।

c) गोबर की खाद

गोबर की खाद का प्रयोग करना जैविक उर्वरीकरण का एक अन्य तरीका है। जैविक खेतों में आमतौर पर गोबर की खाद का इस्तेमाल किया जाता है। यह खाद अच्छी तरह सड़ी हुई होनी चाहिए, जिसे पौधों के चारों तरफ डाला जा सकता है। हालाँकि, गोबर की खाद डालने से पहले आपको अपने स्थानीय लाइसेंस-प्राप्त कृषि विज्ञानी से परामर्श करना चाहिए। मिट्टी को ज्यादा उपजाऊ बनाने और खरपतवार नियंत्रित करने के लिए अन्य किसान मिट्टी की सतह को सूखे पौधों से ढँक देते हैं। इस विधि को पलवार के रूप में जाना जाता है।

NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE